North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

CIF IMPACT FACTOR:4.465

ISSN: 2454-2326 Vol. 3, Issue-9 September-2017

हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का बुद्धि, लिंग एवं आवास के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

नीरज कुमार शर्मा

पी०एच०डी० (शिक्षाशास्त्र) छात्र

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

धारवाड़ कर्नाटक

प्रस्तावना

आज प्रत्येक व्यक्ति आधुनीकीकरण की दौड़ में शामिल है। आज समाज प्रगति की ओर अग्रसर है। हम आज जिस युग में रह रहे हैं, उस युग में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से आगे निकल जाने के तत्पर है। व्यक्ति के ऊपर अत्याधिक कार्यभार बढ़ रहा है। बढ़ते कार्यभार व भागदौड़ के कारण व्यक्ति में चिन्ता, तनाव, कुंठा, दबाव आदि अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। आज का युग तकनीकी युग है, परन्तु बढ़ी हुई तकनीकी व अन्य सुख सुविधाओं के बीच व्यक्ति स्वयं को भौतिक रूप से तो प्रसन्न महसूस कर रहा है, परन्तु आज व्यक्ति की मानसिक स्थिति अत्यधिक बिगड़ती जा रही है और व्यक्ति स्वयं को मानसिक रूप से असहाय महसूस कर रहा है। आज के दौर की व्यस्तता भरी जिन्दगी में व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन लाकर अपने वातावरण के मध्य संतुलन बनाये रखने का प्रयास करता है, परन्तु जब व्यक्ति सन्तुलन बनाने में असमर्थ हो जाता है तो वह तनावपूर्ण स्थिति में आ जाता है और जब व्यक्ति किसी तनावपूर्ण स्थिति में घिर जाता है तो उसमें सबसे पहली सांवेगिक अनुक्रिया जो होती है, वह चिन्ता की होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्य

जब शोधकर्ता के समाचार पत्रों में पढ़ा कि किसानों ने कर्ज को न चुका पाने की चिन्ता के कारण आत्महत्या कर ली, तो कहीं शेयर बाजार गिरने की चिन्ता के कारण बड़े–बड़े शेयर धारकों ने आत्महत्या कर ली तो शोधकर्ता का ध्यान इस ओर जाना शुरू हुआ। शोधकर्ता ने यह भी देखा कि समाज में लगभग प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी चिन्ता से ग्रसित हैं। कोई अपनी शिक्षा को लेकर चिन्तित है, तो कोई अपने रोजगार को लेकर चिन्तित है। माता–पिता अपने बच्चों के बारे में चिन्तित हैं। कहीं धर्मगुरू धर्म प्रचार के लिये चिन्तित हैं, तो कहीं राजनेता सत्ता के लिये चिन्तित हैं। कोई

अपने वर्तमान के लिये चिन्तित हैं तो कोई अपने भविष्य के लिये चिन्तित है। जिधर देखो उधर चिन्ता ही चिन्ता है।

शोधकर्ता ने दैनिक जागरण समाचार पत्र ;28ण्06ए 2014द्ध में पढ़ा कि 'प्रेमी ने की खुदखुशी'। जिससे शोधकर्ता का ध्यान किशोरावस्था की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ और देखा कि किशोरावस्था में विद्यार्थी, चिन्ता से अधिक ग्रसित रहते हैं, उन्हें कभी किसी से मिलने की चिन्ता रहती है तो कभी उन्हें किसी से बिछुड़ने की चिन्ता। कभी उन्हें आत्म–सम्मान की चिन्ता रहती है तो कभी परीक्षा में सफलता की चिन्ता रहती है।

शोधकर्ता ने देखा कि व्यक्ति प्राचीन काल से ही किसी न किसी चिन्ता से ग्रसित रहा है। यदि आधुनिक समाज में देखा जाये तो व्यक्ति अनेक चिन्ताओं से घिरा रहता है। जैसे– घर की चिन्ता, नौकरी की चिन्ता, बच्चों की चिन्ता, कारोबार की चिन्ता आदि। स्कूल जीवन में चिन्ता को देखा जाये तो किशोरावस्था में अत्यधिक चिन्ता पायी जाती है। जैसे– भविष्य के लिए, मित्रता के लिए, समायोजन के लिये चिन्ता इन सब बातों को देखकर शोधकर्ता के मन में चिन्ता के बारे में अनेक विचार आने लगे। इसके पश्चात शोधकर्ता ने अपनी पर्यवेक्षिका से चिन्ता के बारे में विचार–विमर्श करके ''चिन्ता'' ;।दगपजलद्ध पर अध्ययन करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन का समस्या कथन निम्नवत है–

''हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का बुद्धि, लिंग एवं आवास के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन''

समस्या कथन में प्रयुक्त पदों की सक्रियात्मक परिभाषाऐं:–

समस्या कथन में प्रयुक्त पदों की सक्रियात्मक परिभाषाऐं निम्नलिखित हैं:–

➢ हाईस्कूल स्तर

शोध अध्ययन में हाईस्कूल स्तर से तात्पर्य विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहे कक्षा 10 के विद्यार्थियों से है।

➢ विद्यार्थी

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त विद्यार्थी शब्द से शोधकर्ता का तात्पर्य बालकों के सामान्यतः उस उभयनिष्ठ एवं संयुक्त सम्बोधन की ओर इशारा करता है, जो एक निश्चित समय तक नियन्त्रित परिवेश

अर्थात विद्यालय में रहकर निर्धारित पाठ्यक्रम के तहत औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने के कारण विद्यार्थियों की श्रेणी में आते हैं।

- **चिन्ता**

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चिन्ता शब्द से शोधकर्ता का तात्पर्य शक्तिहीनता, असहायता की भावना एवं तनाव की अवस्था से है, जो बालकों में सामान्यतः पायी जाती है।

- **बुद्धि**

प्रस्तुत शोध में बुद्धि शब्द से शोधकर्ता का तात्पर्य व्यक्ति या बालकों में समायोजन की योग्यता से है अर्थात बालकों में आपसी समायोजन से है।

- **लिंग**

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त लिंग शब्द से शोधकर्ता का तात्पर्य छात्र एवं छात्राओं (बालक एवं बालिकाओं) से है।

- **आवास**

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त आवास शब्द से शोधकर्ता का तात्पर्य गॉव एवं शहरों में निवास करने वाले विद्यार्थियों से है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैः–

;1द्ध हाईस्कूल स्तर के उच्च बुद्धि स्तर एवं निम्न बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;2द्ध हाईस्कूल स्तर के छात्र एवं छात्राओं की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;3द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;4द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;5द्ध हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;6द्ध हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;7द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;8द्ध हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर के लड़कों एवं निम्न बुद्धि स्तर के लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

;9द्ध हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर की लड़कियों एवं निम्न बुद्धि स्तर के लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं निम्नखिलिखत हैं–

;1द्ध हाईस्कूल स्तर के उच्च बुद्धि स्तर एवं निम्न बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;2द्ध हाईस्कूल स्तर के छात्र एवं छात्राओं की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;3द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;4द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;5द्ध हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;6द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;7द्ध हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;8द्ध हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर के लड़कों एवं निम्न बुद्धि स्तर के लड़कों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

;9द्ध हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर की लड़कियों एवं निम्न बुद्धि स्तर की लड़कियों की चिन्ता में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध समस्या से जुड़े विभिन्न पक्षों का सीमांकन निम्न प्रकार से हैः–

;1द्ध प्रस्तुत शोध अध्ययन हाईस्कूल कक्षा में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

;2द्ध प्रस्तुत शोध अध्ययन हिन्दी माध्यम से कक्षा में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित है, जो उ0प्र0 बोर्ड की हाईस्कूल परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं।

;3द्ध प्रस्तुत शोध अध्ययन में बुद्धि के मापन के लिए एस0एस0 जटौला द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण तथा चिन्ता के मापन के लिए सिन्हा एण्ड सिन्हा द्वारा निर्मित ैह|ज तक ही सीमित है।

;4द्ध प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात (टी–परीक्षण) तक ही सीमित है।

;5द्ध प्रस्तुत शोध अध्ययन मेरठ मण्डल के विद्यार्थियों तक सीमित है।

❖ शोध विधि

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

❖ जनसंख्या

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन हेतु मेरठ मण्डल (उत्तर प्रदेश) के माध्यमिक शिक्षा परिषद के हाईस्कूल स्तर के हिन्दी माध्यम से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। मेरठ मण्डल के विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रूप में लेने से न्यादर्श प्रतिचयन में शोधकर्ता को सुविधा रही है।

❖ न्यादर्श

अध्ययन हेतु मेरठ मण्डल के 1000 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है जिसमें ग्रामीण एवं शहरी तथा छात्र एवं छात्राओं को समान प्रतिनिधित्व दिया गया है।

शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का प्रतिचयन

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन हेतु ''यादृच्छिक प्रतिचयन प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इस कार्य के लिए शोधकर्ता ने मेरठ मण्डल (उत्तर प्रदेश) के माध्यमिक शिक्षा परिषद के अन्तर्गत हिन्दी माध्यम से हाईस्कूल कक्षा में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को प्रतिचयन करने का निश्चित किया इसके बाद शोधकर्ता ने मेरठ मण्डल के आठ जिलों– मेरठ, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, गौतमबुद्ध नगर एवं हापुड़ में से एक जिले को चुनने के लिए साधारण यादृच्छिक (लाटरी) प्रतिदर्शन प्रविधि का प्रयोग किया जिसके परिणामस्वरूप जिला बुलन्दशहर प्राप्त हुआ जो शोधकर्ता के लिए अधिक अच्छा और सुविधाजनक था क्योंकि शोधकर्ता जिला बुलन्दशहर का रहने वाला है तथा शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को अधिक गहराई से किया जा सका है। बुलन्दशहर जिले का निश्चय होने के बाद शोधकर्ता ने जिला विद्यालय निरीक्षक बुलन्दशहर से जिला–बुलन्दशहर में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के अन्तर्गत हिन्दी माध्यम के उन सभी विद्यालयों की सूची प्राप्त की जिनमें हाईस्कूल कक्षा संचालित हैं। विद्यालयों की सूची प्राप्त करने के बाद शोधकर्ता द्वारा सूची को दो भागों में बांट लिया गया। एक सूची में शहरी विद्यालयो को रखा तथा दूसरी सूची में ग्रामीण विद्यालयों को रखा। इसके बाद शहरी विद्यालयों को पुनः दो भागों–शहरी बाल विद्यालय तथा शहरी बालिका विद्यलायों में बांटा गया इसी प्रकार से ग्रामीण विद्यालयों को भी दो भागों–ग्रामीण बाल विद्यालय एवं ग्रामीण बालिका विद्यालयों में विभक्त किया गया। विद्यालय की चार सूची–शहरी बाल विद्यालय, शहरी बालिका विद्यालय, ग्रामीण बाल विद्यालय तथा ग्रामीण बालिका विद्यालय बनाने के बाद शोधकर्ता द्वारा 1000 न्यादर्श लेने हेतु तथा अपनी परिकल्पनाओं के अनुरूप चारों सूचियों में से 250.250 विद्यार्थी लेने का निश्चय किया। प्रत्येक सूची से पांच विद्यालयों को साधारण यादृच्छिक प्रविधि (लाटरी) द्वारा चुना गया तथा प्रत्येक विद्यालय से 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में प्रतिचयनित किया गया। इस प्रकार से शहरी क्षेत्र के पांच बालक विद्यालयों, शहरी क्षेत्र के पांच बालिका विद्यालयों, ग्रामीण क्षेत्र के पांच बालक विद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र के पांच बालिका विद्यालयों को चुना गया है। प्रत्येक विद्यालय से 50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में प्रतिचयनित करने के लिए विद्यालय के प्रधानाचार्य से मिलकर शोधकार्य में सहयोग हेतु अनुमति प्राप्त की तथा कक्षा अध्यापक से मिलकर हाईस्कूल कक्षा के विद्यार्थियों की सूची ली। इन सूचियों में से केवल सूची के अनुसार ही विद्यार्थियों को चिन्हित किया, जैसे शहरी विद्यालयों हेतु केवल शहरी क्षेत्र से आने वाले विद्यार्थियों को ही चिन्हित किया क्योंकि शहरी विद्यालयों में ग्रामीण क्षेत्रों से भी विद्यार्थी अध्ययन करने आते हैं। इसी प्रकार ग्रामीण विद्यालय हेतु केवल ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों को ही चिन्हित किया गया। इसके बाद प्रत्येक विद्यालय के लिए चिन्हित विद्यार्थियों में से साधारण यादृच्छिक (लाटरी) प्रविधि द्वारा 50 विद्यार्थियों को चुना जिससे इन विद्यार्थियों पर सिन्हा का कम्प्रेहेसिव एनजाइटी परीक्षण तथा एस0एस0 जलौटा का सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण को लागू किया जा सके।

उपकरण का चयन

➢ सिन्हा कम्प्रैहैन्सिव एनजाइटी परीक्षण

यह एक मानकीकृत परीक्षण है। इसको ए0के0पी0 सिन्हा एवं एल0एन0के0 सिन्हा ने बनाया था। इसको ैबीजे. नाम से भी जाना जाता है। यह परीक्षण हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों माध्यमों में उपलब्ध है। इस परीक्षण में 90 पद हैं। इस परीक्षण को विद्यार्थियों के चिन्ता स्तर को जानने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

➢ सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षणः

शोधकर्ता द्वारा छात्रों की बुद्धि मापने के लिए डा0 एस0एस0 जटौला द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण का निर्माण 1964 में किया गया। इसका प्रयोग न्यादर्श को उच्च बुद्धि स्तर एवं निम्न बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों में वर्गीकृत करने के लिए किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधि

शोध अध्ययन की सभी वांछनीय आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अनुसन्धान में निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया है–

➢ मध्यमान

मध्यमान को अंकगणित औसत ;।तपजीउमजपब ।अमतंहमद्ध भी कहते हैं। मध्यमान को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि दिये हुये अंक वितरण के समस्त अंकों को जोड़कर उनकी संख्या से भाग देने से जो मान प्राप्त होता है, उसे मध्यमान कहते हैं।

➢ मानक विचलन

विचलनशीलता के लिए सर्वाधिक प्रयोग में आने वाला गुणांक मानक विचलन है। सभी प्राप्तांकों के उनके मध्यमान से लिये गये विचलनों के वर्गों के औसत के वर्गमूल को मानक विचलन कहते हैं। दूसरे शब्दों में यदि सभी प्राप्तांकों का उनके मध्यमान से विचलन या अन्तर लेकर इन अन्तरों का वर्ग करके जोड़ लें तथा इस योगफल को प्राप्तांकों की संख्या से भाग करके प्राप्त भागफल का वर्गमूल ज्ञात कर लें तो मानक विचलन प्राप्त हो जायेगा।

➢ क्रान्तिक अनुपात

दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की परख 'टी' परीक्षण द्वारा की जाती है। इसके लिये आवृत्ति वितरण सामान्य वक्र में होना चाहिये तभी 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। जब समूह का आकार 30 से बड़ा होता है तब 'टी' परीक्षण के स्थान पर क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करते हैं। क्रान्तिक अनुपात ;ब्ण्द्ध की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की जाती हैः–

प्रस्तुत शोध अध्याय के परिणाम

;1द्ध ''हाईस्कूल स्तर के छात्र एवं छात्राओं की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर की छात्राओं में छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

;2द्ध ''हाईस्कूल स्तर के उच्च बुद्धि स्तर एवं निम्न बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर के निम्न बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों में उच्च बुद्धि स्तर के विद्यार्थियों से चिन्ता अधिक है।

;3द्ध ''हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों में शहरी विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

;4द्ध ''हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों में शहरी लड़कों की अपेक्षा चिन्ता सार्थक रूप से अधिक है।

;5द्ध ''हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों में शहरी लड़कियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

;6द्ध ''हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों एवं शहरी लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर की ग्रामीण लड़कियों में शहरी लड़कों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

;7द्ध ''हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण लड़कों एवं शहरी लड़कियों की चिन्ता में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

;8द्ध ''हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर के लड़कों एवं निम्न बुद्धि स्तर के लड़कों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर के निम्न बुद्धि स्तर के लड़कों में उच्च बुद्धि स्तर के लड़कों की अपेक्षाकृत सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

;9द्ध ''हाईस्कूल स्तर पर उच्च बुद्धि स्तर की लड़कियों एवं निम्न बुद्धि स्तर के लड़कियों की चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना'' के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि– हाईस्कूल स्तर पर निम्न बुद्धि स्तर की लड़कियों में उच्च बुद्धि स्तर की लड़कियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक चिन्ता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययनों के लिए सुझाव निम्नलिखित हैं:–

;1द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिए विशाल समूह को लिया जा सकता है।

;2द्ध प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों को चुना है। शोध अध्ययन के लिए स्नातक स्तर, इण्टरमीडिएट स्तर को भी चुना जा सकता है।

;3द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिए जनजातियों एवं गैर जनजातियों को लिया जा सकता है।

;4द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिए सामान्य जाति तथा अन्य जातियों के छात्र–छत्राओं को अध्ययन के लिये चुना जा सकता है।

;5द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिये जनपदों का अलग–अलग चुनाव किया जा सकता है।

;6द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिये विद्यार्थियों के विभिन्न आयु वर्गो। को चुना जा सकता है।

;7द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिये अध्यापकों को चुना जा सकता है।

;8द्ध चिन्ता को बढ़ावा देने वाले कारकों का अध्ययन किया जा सकता है।

;9द्ध चिन्ता के अध्ययन के लिये छात्रों के अनेक मनोवैज्ञानिक पक्षों (बुद्धि, व्यक्तित्व आदि) को चुना जा सकता है।

;10द्ध शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकों पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

;11द्ध विज्ञान संकाय के शिक्षकों एवं कला संकाय के शिक्षकों पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

;12द्ध ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

;13द्ध अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

;14द्ध अलग–अलग बोर्डों के विद्यार्थियों पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

;15द्ध अलग–अलग बोर्डों के अध्यापकों पर चिन्ता का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- अस्थाना, डॉ0 विपिन;2010द्ध, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- अमर उजाला;2013द्ध, मेरठ संस्करण, समाचार पत्र।
- ठंदहंए बिंउंद स्ंस ;2014द्धण ।बंकमउपब ।दगपमजल ।उवदह भ्पही ैबीववस ैजनकमदजे पद त्मसंजपवद जव ळमदकमत ंदक जलचम वि थ्ंउपसलण् ैवकीं ैदबींलंदण श्रंद 2014ण्ंैछरू0975.1284ण्टवसण्5ण्ेन्म.1ण्च्च्1.7ण
- भटनागर, ए0बी0;2012द्ध, मनोविज्ञान और शिक्षा के मापन एवं मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
- दैनिक जागरण;2013द्ध, मेरठ, समाचार पत्र।
- ळंतह ळममजं;2010द्धण ।बंकमउपब ।दगपमजल ंदक स्पमि `ापससे वि ैमबवदकंतल `बीववस बेपसकतमदए ।इेजतंबजए श्रवनतदंस वि बवउउनदपजल हनपकंदबम ंदक मेमंतबी 2011ए टवसण 28ए छवण 3ए च्च 465.475ण ैप्छ.0970.1346ण
- ळंतह ळममजं;2010द्धण स्पमि ैापससे ंदक ।बंकमउपब ।दगपमजल वि ैमबवदकंतल ैबीववस बेपसकतमदए क्कनजतंबोए ैमचजमउइमत 2011ए टवसण 11ए छवण.1ए च्च्च 23.271ण
- ळंतहए ळममजं ;2010द्धण ।बंकमउपब ।दगपमजल ंदक स्पमि ैापससे वि ैमबवदकंतल ैबीववस बेपसकतमदण श्रवनतदंस ब्वउउनदपजल ळनपकंदबम ंदक त्मंतबीण छवण 2011ण्ैप्छरू0970.1346ण टवसण्28ण्छवण छवण 3ण च्च्465.475ण
- गुप्ता ए0पी0;2011द्ध, शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद।
- हिन्दुस्तान;2013द्ध, मेरठ संस्करण, समाचार पत्र।
- प्उेंपानए डण्स्ण ;2014द्धण । बवउचंतंजपअम ैजनकल वि ।दगपमजल ।उवदह भ्ट ैमतवचवेपजपअम प्दकपअपकनंसेए ब्ंदबमत च्ंजपमदजे ंदक प्कपअपकनंसे तिवउ जीम छवतउंजपअम च्वचनसंजपवदण डमकपबंस श्रवनतदंस वि ।उइपंण 2014ण टवसनउम 35ण छवण2ण्च्च्.39.47ण

- कपिल, डॉ0 एच0के0;2010द्ध, सांख्यिकी के मूल तत्व, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2012प
- डपीतंए ैण्ड्ढ ;2013द्धण श्रवइ ।दगपमजल ंदक च्मतेवदंसपजल ।करनेजउमदज वि िमबवदकंतल ैबीववस ज्मंबीमत पद त्नतंस ंदक न्तइंद ंतमंेण श्रवनतदंस वि ।तजे ेबपमदबम ंदक ब्वउउमतबमए ठ।त्ब्ण् 2013ण् ैछरू 2307.3713ण् टवसण्1ण्छवण्1ण्च्च.105.125ण्
- छीममकंए ।पींजी ;2005द्धण् स्पमि ेापसस ंदक ।बंकमउपब ंदगपमजल वि िमबवदकंतल ेबीववस बेपसकतमदण् म्कनजतंबो श्रवनतदंसण् ैमचजण् 2011ण् ैछ रू 0942.9844ण् टवसण् 11ए छवण् 1ण् च्च्ण् 24.27ण्
- च्ंदकमलए ज्ञण्च्ए ।बजपवद त्मेमंतबी पद क्कनबंजपवद ज्मबीण् स्वदकवदए च्पजंउीए 1969ण्
- त्पबींतकए ठण् ंदक ठंसकंनतए श्रत ;2013द्धण् थ्वतमपहद स्ंदहनंहम ंदगपमजल ंदक पजे म्ििमबज वद ेजनकमदजेण् ज्म्ैव्स् श्रवनतदंसण् छवअण् 2012ण् ैचमबपंस म्कण् 53ण् च्च् 1.4ण्
- ैतवरंए ैजनकल वि ।दगपमजल च्तवदमदमे ंदक म्उवजपवदंस प्दजमससपहमदबम प्द त्मसंजपवद जव ।बंकमउपब ।बीपमअमउमदज वि च्तम.न्दपअमतेपजल ैजनकमदजेए ।इेजतंबज प्दजमतदंजपवदंस त्ममितममक त्मेमंतबी श्रवनतदंसए श्रनसल 2011ए ैछ.0975.3486ए त्छप् रू त।श्रठप्स्ए 2009ध्20097ए टवसण प्पए प्ेेनम.22ए च्च् 1.5ण्
- शर्मा, आर0ए0;2008द्ध, शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ संस्करण।
- शर्मा, डॉ0 डी0पी0;2004द्ध, शिक्षा मनोविज्ञान, पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, डॉ0 रमेश चन्द;2008द्ध, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2010.11ण्
- श्रीवास्तव, डॉ0 डी0एन0;2007द्ध, बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, तृतीय संस्करण।
- ैपदही क्तण त्ैण्ए ब्वततमसंजपवद वि ।दगपमजलए छंजपवदंस च्लबीवसवहपबंस ब्वतचवतंजपवदए प्दकपं म्ककपजपवदए चैंतहंअ त्मेमंतबी डवदवहतंची ैमतपमे छवण् 25ए च्च् 48.61ण्
- सिंह, डॉ0 आर0एन0;2010द्ध, आधुनिक विकासात्क मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2010.11ण्
- सिंह, अरूण कुमार;2006द्ध, मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, सातवाँ संशोधित संस्करण।
- सिंह, अरूण कुमार;2005द्ध, शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, नवीन संस्करण।
- ैनकण, ।दवनच ंदक ैनरंजं ;2006द्धण ।बंकमउपब च्मतवितउंदबम पद त्ेेनम मसंजपवद जव ैमसि.म्ंदकपबंचचपदह जमेज ।दगपमजल ंदक ैजनकल भ्ंइपजे वि भ्पही ैबीववसण बेपसकतमदण त्मेमंतबी ।इेजतंबजे वद म्कनबंजपवदण छब्म्त्ज्ण्क्मसीपण 1998.2009 च च 68.74ण्
- ैउपदंजींद टण्क्ण च्तमकपबजवते वि प्दजमतअपमू ।दगपमजलए ।इेजतंबजए श्रवनतदंस वि ब्वउउपदपजल ठनपकंदबम – त्मेमंतबीए श्रनसल 2011ए टवसण् 28ए छवण्.2ए च्च् 304.312ण्
- वर्मा, डॉ0 जी0एस0;2010द्ध, शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार एवं प्रबन्ध, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2005ण्
- टमसंलनकींदए ।ण ंदक ळंलंजतपकमअप ;2010द्धण म्ििबंबल वि इमींअपवतंस पदजमतअमदजपवद पद तमकनबपदह ंदगपमजल ंदक कमचतमेपवद ंउवदह उमकपंस ेजनकमदजेण प्दकनेजतपंस चैबीपंजतल श्रवनतदंसण श्रंदण 2010ण क्वसरू10ण्4103ण्0972.6748ण्77636ण टवसण 19धप्ेेनम 1ण च्च्ण 41.46ण्
- ूण्ठपदहध्.।दगपमजल त्मंतबी पद प्दकपंध्डवदवहतंचीण्
- ूण्हववहसमध्.।दगपमजलध्प्दजमतदंजपवद ।इेजतबजण्
- ूण्लीववध्.।दगपमजलध्ळमदमतंस प्दजतवकनबजपवदण्